संपादक के नोट

मैं मेरे प्रभु और मुक्तिदाता येशु मसीह के सर्वशक्तिमान के नाम पर आप सभी का अभिवादन करती हूँ। यह महिना रोज़ ऑफ़ शारोन कलिसिया में हम सभी के लिए एक विशेष महीना है। हम इस महीने की १४ तारीख को हमारी कलिसिया के गठन के ११ साल पूरा कर रहे हैं। मैं धन्यवाद देती हूँ और परमेश्वर की स्तुति करती हूँ उसका सारा प्यार और अनुग्रह के लिए जिसके द्वारा इन सभी वर्षों में उसने हमारी अगुवाई की। अनेक प्रकार के लोग, हमारे दयालु परमेश्वर को देखने के लिए और उसकी सुशोभित आवाज़ सुनने के लिए आए थे। कई माताओं ने भी अपने बच्चों को येशु को दिखलाने के लिए और उसे छुआने के लिए लाए थे। चेलें माताओं के साथ गुस्से में थे क्योंकि उन्होंने सोचा कि वें बच्चें येशु को परेशान करेंगे। येशु ने बच्चों की मासूम चेहरे को देखा और उसका दिल पिघल गया और बच्चों के लिए प्यार के साथ भर गया। **मरकुस** १०रू१३.१६ **– फिर लोग बच्चों को उसके पास लाने लगे कि वह उन्हें स्पर्श करें, परन्तु चेलों ने उन्हें ड़ांटा। येशु ने जब यह देखा तो क्रुद्ध होकर उनसे कहा, ‟बच्चों को मेरे पास आने दो, उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। मैं तुम से सच कहता हूं, जो कोई परमेश्वर को बच्चे की भांति ग्रहण नहीं करता वह उसमें कदापि प्रवेश करने न पाएगा।" तब वह उनको गोद में लेकर और उन पर हाथ रख कर उन्हें आशिष देने लगा।**

येशु ने सोचा : क्या वे भी मेरे हाथों की रचना नहीं हैं? उसने उन्हें गले लगाया और उन्हें आशिषित किया। आज भी वह अपने बच्चों को आशीष देता है।

एक दिन चेन्नई में एक कंपनी का मालिक अपने बच्चे के साथ चेन्नई में मुझसे मिलने के लिए आया। बच्चे की दादी भी उनके साथ आई थी। जब मैंने बच्चे को देखा तो मेरी आँखों में आँसू आ गए। अफ़सोस की बात थी, कि उस बच्चे का एक हाथ और एक पैर मुड़ा हुआ था। बच्चे के पिता ने दुखी होकर कहा हम क्रिस्ती नहीं हैं और हम येशु को नहीं जानते। लेकिन उसने आँसू भरे आँखों से मुझे खोजकर बच्चें के चहरे को देखकर प्रार्थना करने की माँग की।

मैंने अपने हाथ में बच्चे को ले लिया और एक सोफ़े पर उसे लिटाया। मैंने बच्चे की चंगाई के लिए येशु से प्रार्थना की। मैंने कुछ तेल पर प्रार्थना किया

और पिता को दे दिया और नियमित रूप से बच्चे पर लगाने के लिए कहा। कुछ महीनों के बाद, वह मुझसे मिलने आया था; उसने मुझे बताया कि वह बच्चें पूरी तरह से चंगा हो गया है। इतना ही नहीं, उसने और उसके ने परिवार मसीह को अपना लिया है। उन्होंने पूरी तरह से येशु के लिए अपने जीवन को समर्पित कर दिया है। क्या तुम अपने दिल में येशु के लिए जगह दोगे ताकि परमेश्वर का प्रेम तुम्हारे परिवार पर आए? येशु का प्यारा आवाज़ सभी बच्चों को बुला रहा है।

येशु की आवाज़ एक सांत्वना देनेवाली आवाज़ है। **लूका ७:१२–१५ – जब वह नगर के फाटक पर पहुंचा ते देखा, लोग एक मुर्दे को जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था बाहर लिए जा रहे थे। और वह विधवा थी और नगर के बहुत–से लोग उसके साथ थे। विधवा को देख कर प्रभु को उसपर बड़ा तरस आया और उसने कहा, “मत रो।" फिर उस ने पास आकर अर्थी को छुआ और कन्धा देने वाले रूक गए। तब उसने कहा, “हे जवान, मैं तुझ से कहता हूं, उठ!" मुर्दा उठ बैठा और बोलने लगा। येशु ने उसे उसकी मां को सौंप दिया।** – वे विधवा के इकलौते बेटे की लाश ले जा रहे थे। एक मिनट में येशु मां की पीड़ा और दर्द को समझ गया, और उसने उसे शान्ति दी। मनुष्य केवल तुम्हारा चेहरा देख सकता हैं; वह तुम्हारे दिल को समझ नहीं सकता है। परन्तु परमेश्वर तुम्हारे दिल को समझ सकता है; ऐसा कुछ भी नहीं है जो उस से छिपा रह सकता है। येशु ने मां पर तरस खाया; उसके दर्द को जानकर येशु ने उसके बेटे को मरे हुओं में से उठाया। पवित्र शास्त्र में, हम देखते हैं जो कोई भी आँसूओं से येशु के पास आया है; येशु ने उनके आँसूओं को पोछ दिया और उन्हें राहत दी है।

राजा हिजकिय्याह मृत्यु पर्यत बीमार था और उसने आँसूओं से प्रभु को पुकारा, और प्रभु ने उसकी पुकार सुनी। **यशायाह ३८:१–५ – उन दिनों में हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ कि मृत्यु के समीप पहुंच गया। और आमोस के पुत्र यशायाह नबी ने उसके पास आकर उस से कहा, “यहोवा यो कहता है; अपने परिवार की समुचित व्यवस्था कर ले, क्योंकि तू मर जाएगा, जीवित न बचेगा।" तब हिजकिय्याह ने दीवार की ओर मुंह फेरकर यहोवा से प्रार्थना की, और कहा, “हे यहोवा, मैं तुझ से विनती करता हूं, स्मरण कर कि मैं तेरे सामने सच्चाई और सम्पूर्ण मन से कैसे चला हूं और जो तेरी दृष्टि में ठीक है वही करता आया हूं। और हिजकिय्याह बिलख बिलख कर रोया। तब यहोवा का यह वचन यशायाह के पास पहुंचाः "हिजकिय्याह से जाकर कह, कि तेरे पूर्वज दाऊद का परमेश्वर यहोवा यो कहता हैः मैंने तेरी प्रार्थना सुनी**

है, मैंने तेरे आसुंओं को देखा है। देख, मैं तेरे जीवन में पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दूंगा। राजा योशिय्याह ने यहोवा को दोहाई दी कि परमेश्वर का गुस्सा उसके लोगों पर नहीं आना चाहिए। परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुन ली। जो कोई भी, आँसूओं से परमेश्वर के पैरों के पास आया और प्रार्थना की, परमेश्वर ने हर अनुरोध सुनी और उसका जवाब दिया है। एक बार आराधनालय का सरदार आया और येशु के पैरों पर गिर गया और कहा कि उसकी बेटी मृत्यु के मोड़ पर है। येशु ने उसे राहत देकर कहा, ‟डरो नहीं, तुम्हारा बच्चा जीवित है।" जब एक कनानी स्त्री उसके पास आई उसके सामने यह विनती करते हुए कि उसकी बेटी को मुक्त करे, येशु ने उसे राहत दी और उसकी बेटी को छुड़ाया। येशु अपरिवर्तनीय है, आज भी वह हमें सांत्वना देता हैं और हमारे आँसूओं को पोंछता हैं। यशु बुलाता हमें, बड़ी चाहत से हमें बाहों में लेने यशु बुलाता हमें...

परमेश्वर की बाहें हम सब को ग्रहण करने के लिए खुली हैं, तो हम सब येशु की ओर मुढ़ें, वह हमें सांत्वना देगा।

फिर मिलने तक, परमेश्वर तुम सब को आशीर्वाद दे।

पास्टर सरोजा म.

उत्साह के साथ प्रभु की सेवा करो

आज, हम ‟एलिय्याह" के जीवन को देखकर शुरू करेंगे, वह परमेश्वर का एक महान नबी था। **२ राजा २:११** कहता है – **तब ऐसा हुआ जब वे बातें करते करते आगे चले जा रहे थे, तो देखो, एक अग्नि–रथ और अग्निमय घोड़ों ने उन दोनों को अलग कर दिया। और एलिय्याह बवण्डर के द्वारा ऊपर आकाश पर चढ़ गया।** दोनों, एलिय्याह और एलीशा डरे नहीं जब आग की रथ उन्हें दिखाई दी, क्योंकि उनका मानना था की यह आग स्वर्ग से भेजा गया था। यह एक भस्म करनेवाली आग नहीं थी, लेकिन एक जीवन देनेवाला आग था। एलिय्याह ने बहुत उत्साह और जोश से प्रभु की सेवा की। हम में से कई सोचेंगे की वह एक ‟सुपरमैन" था। लेकिन, नहीं, एलिय्याह हमारे जैसा स्वभाव में एक साधारण आदमी था। वह भी तुम्हारे और मेरे जैसे पीड़ित हुआ। फ़र्क सिर्फ़ इतना है एलिय्याह एक महान प्रार्थना योद्धा

और परमेश्वर का भक्त था। हम **याकूब ५:१७** में देखते हैं – **एलिय्याह भी हमारे ही जैसे स्वभाव का मनुष्य था; और उसने वर्षा न होने के लिए गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की; और साढ़े तीन वर्षों तक धरती पर वर्षा न हुई।** एलिय्याह परमेश्वर का पहला नबी था जिसने मरे हुओं को जीवित करने का चमत्कार प्रदर्शन किया था। हम **१ राजा १७:२०–२४** में देखते हैं – **तब उसने यहोवा को पुकार कर कहा, "हे मेरे परमेश्वर यहोवा, क्या तू इस विधवा के बेटे का प्राण लेकर इस पर भी विपत्ति ले आया है जिसके यहां मैं टिका हूं?" तब वह उस बालक पर तीन बार पसर गया, और उसने यहोवा को पुकार कर कहा, "हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं तुझ से विनती करता हूं कि इस बालक का प्राण इस में लौट आए।" यहोवा ने एलिय्याह की पुकार सुन ली, और बालक का प्राण उसमें लौट आया और वह जीवित हो गया। तब एलिय्याह उस बालक को अटारी पर से नीचे घर में ले आया और उसे उसकी माता को सौंप दिया; और एलिय्याह ने कहा, "देख, तेरा बेटा जीवित है।" तब उस स्त्री ने एलिय्याह से कहा, "अब मैं जान गई हूं कि तू परमेश्वर का जन है, और तेरे मुंह से निकला हुआ यहोवा का वचन सत्य है।** पवित्र शास्त्र में, हम इसी चमत्कार का प्रदर्शन करने वाले दो अन्य लोगों को देखते हैं। एलीशा शूनेमिन के बेटे को उठाया और येशु मसीह ने मृत्यु से लाजर को उठाया। हनोक और एलिय्याह, दो विशेषाधिकार प्राप्त लोग थे जिन्होंने मृत्यु नहीं देखा था, लेकिन पृथ्वी से उठा लिए गए थे। हम पवित्र शास्त्र के २ राजा २:११–१२ में देखते हैं – **तब ऐसा हुआ जब वे बातें करते करते आगे चले जा रहे थे, तो देखो, एक अग्नि–रथ और अग्निमय घोड़ों ने उन दोनों को अलग कर दिया। और एलिय्याह बवण्डर के द्वारा ऊपर आकाश पर चढ़ गया। एलीशा ने इसे देखा और पुकार उठा, "हाय मेरे पिता, मेरे पिता! इस्राएल के रथ औरघुड़सवारों!" तब उसने अपने वस्त्र पकड़े और उन्हें चीर कर दो टुकड़े कर दिए।** हाँ, एलिय्याह और एलीशा आग से नहीं ड़रे जब आग की रथ उन्हें दिखाई दी। क्योंकि उन्हें यकीन था कि यह आग उन्हें नष्ट करने के लिए नहीं, लेकिन उन्हें जीवन देने के लिए भेजा गया है। इसी तरह, हमें भी आग से ड़रना नहीं चाहिए जो हमें बचाने के लिए भेजा गया है। लेकिन जब इसे हमें नष्ट करने के लिए भेजा गया है तब हमें इस आग से ड़रना चाहिए। **मलाकी ४:५ – देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा।** यह परमेश्वर की भविष्यवाणी है, कि जैसे एलिय्याह इस धरती से जीवित उठा

लिया गया था, श्प्रभु के दिवसश् के आने से पहले पृथ्वी पर भेजा जाएगा। हम ड़रे नहीं, लेकिन हम सभी को तैयार होना हैं जब वह आग एक बार फिर से आ जाएगा हमें बचाने के लिए।

अगला नबी जिसके बारे में हम आज सीखेंगे श्एलीशाश् है। **१ राजा १९:१६–२१ – और इस्राएल का राजा होने के लिए निमशी के पोते येहू का अभिषेक करना; और आबेल– महोला के शापात के पुत्र एलीशा का अपने स्थान पर नबी होने के लिए अभिषेक करना। और ऐसा होगा कि जो हजाएल की तलवार से बच जाएगा उसे येहू मार डालेगा, और जो येहू की तलवार से बच जाएगा उसे एलीशा मार डालेगा। फिर भी मैं इस्राएल में ऐसे सात हज़ार लोगों को बचाए रखूंगा जिन्होंने बाल के आगे घुटने नहीं टेके और न अपने मुंह से उसे चूमा है। तब वहाँ से चलकर शापात का पुत्र एलीशा उसे मिला जो अपने आगे बारह जोड़ी बैल लिए हुए हल जोत रहा था और स्वयं बारहवीं के साथ था। और एलिय्याह ने उसके पास जाकर अपनी चादर उस पर ड़ाल दी। तब वह बैलों को छोड़ कर एलिय्याह के पीछे दौड़ा, और कहने लगा, ब्मुझे अपने माता–पिता को चूम लेने दे, तब मैं तेरे पीछे चलूंगा।" और उसने उस से कहा, ब्लौट जा, मैंने तुझ से क्या किया है?ष् तब वह उसके पीछे जाने से लौट गया, और एक जोड़ी बैल लेकर उनको बलि किया, और बैलों का हल आदि जलाकर उनका मांस पकाया और लोगों को दिया और उन्होंने खाया; तब वह उठा और एलिय्याह के पीछे चला और उसकी सेवा–टहल करने लगा।** हम १९ वचन में देखते हैं, अभिषेक एलीशा पर आता है जब वह खेतों में जुताई कर रहा था, और वह कतार में बारहवें स्थान में था और बैलों का जुआ उसके सामने था। लेकिन फिर भी परमेश्वर उसे चुनकर अभिषेकित करता है। अभिषेक प्राप्त करने के बाद, एलीशा ने प्रभु की सेवा शुरू कर दी। **२ राजा ३:११** कहता है – **परन्तु यहोशापात ने कहा, ब्क्या यहां यहोवा का कोई नबी नहीं जिसके द्वारा हम यहोवा से पूछें?ष् तब इस्राएल के राजा के कर्मचारियों में से एक ने उत्तर देकर कहा, ब्हां, शापात का पुत्र एलीशा यहां है, जो एलिय्याह के हाथ धुलाया करता था।"** वह एक महान नबी बन गया। **मत्ति २०:२६–२७ – तुम में ऐसा न हो। जो कोई तुम में बड़ा बनना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने और जो तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने।** इस दुनिया को छोड़ने से पहले, एलिय्याह ने एलीशा से पुछा, इससे पहले कि मैं ले लिया जाऊ, तू क्या चाहता है , मेरे से पूछ"। तो एलीशा ने उस पर अभिषेक का दूना भाग

के लिए पूछा, जैसे हम देखते है **२ राजा २:९** में – **और ऐसा हुआ कि जब वे पार हो गए तो एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "इस से पहले कि मैं तेरे सम्मुख उठा लिया जाऊं, मांग कि मैं तेरे लिए क्या करू," एलीशा ने कहा, "तेरी आत्मा का दुगुना अंश मुझे मिले।"** हमारे भी जीवन में, हमें परमेश्वर से प्यार करना हैं और उसके पीछे लगे रहना हैं जैसे एलीशा ने करने की इच्छा की। हम पवित्र शास्त्र में देखते हैं कि, प्रभु के लिए जीने वाले सभी लोग सांसारिक आशीर्वाद के बजाय स्वर्गीय आशीर्वाद के लिए इच्छा रखते थे। **१ कुरिन्थियों १४:१ – प्रेम का पीछा करो और आत्मिक वरदानों के धुन में रहो, विशेषकर यह कि तुम भविष्यद्वाणी करो।** एलिय्याह एक साधारण नबी, लेकिन एक शक्तिशाली प्रार्थना योद्धा था – हम देखते हैं कि कैसे परमेश्वर ने एलिय्याह की प्रार्थना सुनकर बारिश को रोक दिया। उसने मृतकों में से विधवा के बेटे को उठाया। हर स्थिति में, एलिय्याह प्रभु के लिए मज़बूती से खड़ा रहा। दूसरी ओर, हम देखते हैं कैसे एलीशा ने उस पर परमेश्वर के अभिषेक का दूना भाग के लिए एलिय्याह से पूछा। जब वह खेतों में जुताई कर रहा था तब उसे चुना गया था। वह बैलों के साथ कतार में बारहवें स्थान पर था, परमेश्वर ने उसे एलिय्याह पर सफ़ल होने के लिए चुना। जब इन दोनों नबियों ने आग के रथ को देखा वे ड़रे नहीं, क्योंकि उनका मानना था कि यह आग उन्हें बचाने के लिए स्वर्ग से भेजा गया था, और उन्हें भस्म करने के लिए नहीं। ऐसा उनका मज़बूत विश्वास था। हमें भी, प्रभु की सेवा करने की इच्छा होना चाहिए, लेकिन यह तब संभव है जब हम उस से प्यार करते है। उदाहरण के लिए, सुलैमान, बुद्धिमान राजा **नीतिवचन २०:१२** में कहता है – **सुनने के लिए कान और देखने के लिए आँख – इन दोनों को यहोवा ने बनाया है।** और हमें याद रखना चाहिए कि जो परमेश्वर ने कान और आंख बनाया है, वह सुनता भी है और हम पर नज़र रखता है।

अगला, हम देखेंगे यहोशापात के जीवन को। वह यहूदा का राजा आसा का पुत्र था। एक राजा के रूप में उसके शासनकाल के दौरान, यहूदियों और इस्राएल में महान शांति थी। लेकिन, जब यहोशापात राजा बना, उसने पहली चीज़, यहूदा के सभी शहरों से ऊंचे स्थानों और वेदियों को नष्ट किया और परमेश्वर का कानून और आज्ञाओं का पालन करने के लिए लोगों को बताया। लेकिन जब उसने ऐसा किया तब अम्मोनी यहोशापात के खिलाफ़ युद्ध करने के लिए आए। **२ इतिहास २०:३ – तब यहोशापात डर गया और उसने यहोवा की खोज में अपना ध्यान लगाया, और उसने पूरे यहूदा में उपवास**

रखने की घोषणा करवाई। यहोशापात, अब भय में था, उसके पास दुश्मन से लड़ने के लिए लोगों की एक बड़ी सेना नहीं थी और न ही हथियार। **२ इतिहास २०:६–१२ – और उसने कहा, ‟हे हमारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा, क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है? और क्या तू जाति जाति के सब राज्यों पर प्रभुता नहीं करता? तेरे हाथ में तो ऐसा बल और पराक्रम है कि तेरा सामना कोई नहीं कर सकता। हे हमारे परमेश्वर, क्या तू ने इस देश के निवासियों को अपनी प्रजा इस्राएल के सामने से निकालकर इसे अपने मित्र अब्राहाम को सदा के लिए नहीं दे दिया? और उन्होंने इसमें बस कर इसमें तेरे नाम का एक पवित्रस्थान यह कहकर बनाया, कि यदि कोई विपत्ति हम पर आ पड़े, अर्थात् तलवार, दण्ड, महामारी या अकाल, तो हम इस भवन और तेरे सामने – क्योंकि तेरा नाम तो इस भवन में है – खड़े होकर अपने क्लेश में तुझे पुकारेंगे और तू सुनकर हमें बचाएगा। और अब देख, तू ने इस्राएलियों को जब वे मिस्र देश से निकल रहे थे, अम्मोनी, मोआबी और सेईर पहाड़ी के लोगों पर आक्रमण नहीं करने दिया, वरन् इस्राएलियों ने उनकी ओर से हट कर उन्हें नाश न किया, देख, वे अब कैसा बदला दे रहे हैं कि हमें उस निज भाग से जिसे तू ने हमें उत्तराधिकार में दिया है, निकालने आए हैं। हे हमारे परमेश्वर, क्या तू उनको दण्ड न देगा ? क्योंकि हम इस बड़ी भीड़ के सामने जो हम पर चढ़ाई करने आ रही है, निर्बल हैं, और हमें कुछ सूझता नहीं कि क्या करें परन्तु हमारी आँखे तो तेरी ओर लगी हैं।"** इसलिए, यहोशापात ने इस्राएल और यहूदा के लोगों को बुलाया उपवास और प्रार्थना करने और प्रभु को पुकारने के लिए, इस मकसद के लिए।

उस समय, परमेश्वर की आत्मा, एक नबी पर आया जो नबूवत करता था। **२ इतिहास २०:१५ – और उसने कहा, ‟हे यहूदा और यरूशलेम के समस्त निवासियों और हे राजा यहोशापात, सुनो! यहोवा तुम से यो कहता है : तुम इस बड़ी भीड़ के कारण मत ड़रो और तुम्हारा मन कच्चा न हो क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं, परमेश्वर का है।** यह लोगों को ताकत दे दी उनकी लड़ाई अम्मोनियों के साथ जारी रखने के लिए। हम देखते है **२ इतिहास २०:२० – और वे बड़े सवेरे उठकर तकोआ के जंगल को गए और जब वे जा रहे थे तो यहोशापात ने खड़े होकर कहा, ‟हे यहूदा और यरूशलेम के निवासियों, मेरी सनो! अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास रखो तो स्थिर रहोगे। उसके नबियों पर भरोसा रखो और सफ़ल हो जाओ।"** लोगों ने प्रशंसा और प्रभु के लिए गाना शुरू कर दिया और जब ऐसा कर रहे थे, परमेश्वर ने दुश्मन को

हरा दिया और यहोशापात और अपने लोगों के लिए जीत दिया। हमें परमेश्वर का आश्वासन **निर्गमन १४:१४** में है – **यहोवा तुम्हारे लिए स्वयं लड़ेगा, बस तुम शान्त रहो।** हम यहाँ यहोशापात के विश्वास को देखते हैं जो प्रभु में था। हमारे प्रभु के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है, केवल हमें उस में सच्ची श्रद्धा और विश्वास होना आवश्यक है। इस प्रकार, वह हमारे जीवन के हर स्थिति में हमें जीत प्रदान करेगा। अगला हम नबी नहेमायाह के बारे में देखेंगे। नहेमायाह महल में रहता था, उसके लिए कोई कमी नहीं थी। फिर भी वह दुः खी था वह उपवास और प्रभु से प्रार्थना कर रखा थी। राजा ने उसकी उदासी को गौर किया और नहेमायाह से उसके दुख का कारण पूछा। **नहेमायाह २:२ – इसलिए राजा ने मझ से पूछा, ष्तू तो बीमार नहीं है, फिर तेरा मुंह क्यो उतरा है? यह तो मन की ही उदासी होगी।" तब मैं अत्यन्त ड़र गया।** नहेमायाह राजा को बताता है कि वह दुखी है, क्योंकि उसके लोग दुश्मन की कैद में लिए गए हैं। **नहेमायाह १:३ – उन्होंने ने मुझ से कहा "जो बचे हुए लोग बन्धुवाई से छूटकर उस प्रान्त में रहते हैं वे महाक्लेश और निन्दा सह रहे हैं। यरूशलेम की शहरपनाह टूटी पड़ी है और उसके नगर–द्वार आग से जला दिए गए हैं।** नहेमायाह की उदासी की तुलना में इसी तरह, हमारा प्रभु येशु मसीह भी दुःखी और उदास है जब उसके बच्चें उनके पापों द्वारा कैद में ले लिए जाते हैं। येशु, परमेश्वर की आत्मा में आननदित हुआ, आत्मा ने उसे खुलासा किया और येशु ने स्वर्ग में अपने पिता को धन्यवाद दिया। पवित्रा शास्त्र में, हम **लूका १०:२१** में देखते हैं – **उसी क्षण वह पवित्र आत्मा में अत्यन्त आनन्दत हुआ, और उसने कहा, ष्हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरी स्तुति करता हूँ कि तु ने बुद्धिमानों और ज्ञानियों से इन बातों को गुप्त रखा पर बच्चों पर प्रकट किया। हाँ, हे पिता, यही तुझे भला लगा।** लेकिन जल्द ही येशु दुखी हुआ क्योंकि उसके बच्चें पापी जीवन में उलझ गए और यह उस पर दर्द लाया। **यशायाह** ५३:४ में हम देखते हैं – **निश्चय उसने हमारी पीड़ाओं को आप सह लिया और हमारे दुखों को उठा लिया। फिर भी हमने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा।** उसने हमारा दुख सहा और हमारे तकलीफ़ों को उठाया और उसी के लिए पीड़ित भी हुआ। **यशायाह** ५३:५ **– परन्तु वह हमारे अधर्म के कामों के लिए कुचला गया; हमारी ही शानति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए।** येशु मसीह हमारे अपराधों के लिए बेधा गया था और हमारे अधर्म के कामों के लिए कुचला गया और हमारी

शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी लेकिन केवल उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए हैं। ऐसा उसका ३आश्चर्यजनक प्यार३ हमारे लिए था। वापस नहेमायाह पर, राजा ने आदेश दिया कि नहेमायाह की सभी इच्छाओं को पूरी की जाए। उसे इस्राएल में मंदिरों के पुनर्निर्माण के लिए सब कुछ प्रदान किया गया। और नहेमायाह ने प्रभु को धन्यवाद दिया **नहेमायाह १३:३१** में – **तब मैंने लकड़ी की भेंट ले आने और प्रथम उपज के देने के समय ठहरा दिए। हे मेरे परमेश्वर, मेरे हित के लिए मुझे स्मरण रख।**
अब हम ३एज्रा३ के जीवन को देखेंगे। वह एक इस्राएली, एक शिक्षक, एक रब्बी, एक नबी था। वह एक था जो परमेश्वर के विधियों का पालन करता था। **एज्रा ७:६ – यही एज्रा बेबीलोन से यरूशलेम गया; और मूसा की व्यवस्था के विषय में जिसे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने दी थी, वह एक निपुण शास्त्री थ। और इसलिए कि उसके परमेश्वर यहोवा का हाथ उस पर था, राजा ने उसे मुंह मांगा वर दे दिया।** एज्रा परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में रखता था। उसने लोगों को वचन सिखाकर तैयार किया। एज्रा ने नहेमायाह के साथ–साथ प्रभु की सेवा शुरू की। एज्रा लगातार वचन में और परमेश्वर के साथ बढ़ता गया। उसकी सरकारी नौकरी थी, इसलिए ज़्यादा समय वह देश के बाहर यात्रा करता था। वह लगभग १३ साल के लिए दूर था। तो अपने देश में वापस लौटने के बाद, एज्रा ने इस्राएल में टूटे हुए मंदिरों का पुनर्निर्माण करने का फ़ैसला किया। जैसे दाऊद कहता है **भजन संहिता** ११९:१–३ में – **क्या ही धन्य हैं वे जो चाल के खरे हैं, और यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं। क्या ही धन्य हैं वे जो उसकी चेतावनियों को मानते हैं, और उसको सम्पूर्ण हृदय से खोजते हैं, और कुटिलता का काम नहीं करते; वे तो यहोवा के मार्गों में चलते हैं।** जो प्रकाशण एज्रा को दिया गया, उसने लोगों को वचन का प्रचार किया। **भजन संहिता** १:१–३ में – **क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की सम्मति पर नहीं चलता, न पापियों के मार्ग में खड़ा होता, और न ठट्ठा करने वालों की बैठक में बैठता है। परन्तु वह तो यहोवा की वयवस्था से आननदित होता और उसकी वयवस्था पर रात–दिन मनन करता रहता है। वह उस वृक्ष के समान है जो जल–धाराओं के किनारे लगाया गया है, और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुर्झाते नहीं: इसलिए जो कुछ वह मनुष्य करता है वह उसमें सफ़ल होता है।** धर्मी का रास्ता, परमेश्वर के वचन के साथ है। हमारे जीवन में भी हमें बड़े ध्यान से परमेश्वर के वचन को पढ़ना है और हमारे जीवन में इसका पालन–पोषण करना है। हमें वचन को महत्त्व देना चाहिए। तो, एज्रा ने

नहेमायाह के साथ काम किया, वचन का प्रचार किया, और इस्राएल के नष्ट किए गए मंदिरों का पुनर्निर्माण किया।
एस्तेर रानी, एक अनाथ थी। वह अपने चाचा मोर्दकै द्वारा पाली–पोसी गई था। वह राजा क्षयर्ष की पत्नी थी। यह राजा १२७ देशों का शासक था, उनमें से भारत एक था। **एस्तेर १:१ – क्षयर्ष राजा अर्थात वही क्षयर्ष जो भारतवर्ष से इथियोपिया तक एक सौ सत्ताइस प्रान्तो पर शासन करता था, उसके दिनो में ऐसा हुआ कि।** एस्तेर रानी एक प्रार्थनापूर्ण महिला और एक बहुत शक्तिशाली रानी थी। **एस्तेर ४:१४ – यदि तू इस समय चुपचाप रहे तो अन्य किसी न किसी उपाय से यहूदियों का छुटकारा और उद्धार हो ही जाएगा , परन्तु तू अपने पिता के घराने सहित नाश हो जाएगी। फिर क्या जाने तुझे ऐसे ही समय के लिए राजपद मिल गया हो?८** यह दिल को छू लेने वाला वचन है, जब प्रभु एस्तेर रानी से कहता है कि अगर वह यहूदियों कि मदद नहीं की तो उनका मदद कहीं और से आएगा। लेकिन फिर, वह और उसके पिता का घर भी नष्ट हो जाएगा। इसलिए, एस्तेर रानी ने यहूदा के लोगों के लिए लड़ने का फ़ैसला किया। उसने उपवास और विलाप के साथ प्रभु से प्रार्थना की पुरिम के त्योहार के दौरान और सभी यहूदियों को फैसला सुनाया, खुद को और अपने वंशजों के लिए अपने मकसद के कारण लड़ने के लिए। हम देखते हैं **एस्तेर ९:३२** में – **और एस्तेर की आज्ञा से पूरीम के ये नियम ठहरा दिए गए और इन्हें पुस्तक में लिख लिया गया।** यहाँ हम एस्थर की प्रार्थना की शक्ति को देखते है और परमेश्वर के वचन में अपने विश्वास को जिसने इस्राएलियों के जीवन को बदल दिया। आज, हमने एलिय्याह, एलीशा यहोशापात, नहेमायाह, एज्रा और एस्तेर रानी के जीवन में देखा है। इन सभी लोगों को परमेश्वर और उसके प्रतिज्ञा में महान विश्वास था। उन्होंने अपना ध्यान केवल परमेश्वर पर और आदमी पर न रखते हुए अपने शत्रुओं से लड़े। हमें भी प्रभु के लिए कुछ करने के लिए, एक ही इच्छा होनी चाहिए। जैसे अय्यूब ने कहा **अय्यूब** १९:२५–२७ में – **मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ाने वाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा। और अपनी खाल के इस प्रकार नाश होने के बाद भी, मैं इस शरीर में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊंगा। जिस मैं स्वयं देखूंग, जिसे मैं अपनी आखो से देखूंगा, दूसरा कोई और नहीं। मेरा ह्रदय भीतर ही भीतर व्याकुल हो रहा है।** और मत्ति २०:२६–२७ में – **तुम में ऐसा न हो। जो कोई तुम में बड़ा बनना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने, और जो तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने।**

हाँ, हमें सच में परमेश्वर के लिए जीना चाहिए, ताकि जब वह वापस आता है तो, हम भी प्रभु के साथ उठा लिए जाएंगे। हमें परमेश्वर की आत्मा पर विश्वास करना चाहिए जो हमारा अगुआई और हमारा मार्गदर्शक करता है। हमने सभी महान लोगों को आज देखा हैं, जिन्होंने प्रभु से प्यार किया है और १००० साल पहले से उस पर विश्वास किया है। इस प्रकार हमें भी उसके वचन में विश्वास करना जारी रखना चाहिए और हमारे जीवन के अंत तक प्रभु के लिए जीना चाहिए।

पास्टर सरोजा म.